



उच्च शिक्षण संस्थानों में पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय के शैक्षणिक स्तर का अध्ययन एवं अवलोकन: उत्तराखण्ड राज्य के विशेष संदर्भ में

¹ रजत पाण्डेय, ² प्रो. (डॉ.) सुखनंदन सिंह,

¹ शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, ² संकायाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,

¹ देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड (<https://orcid.org/0009-0006-9281-6497>)

शोध संक्षेपिका

: उत्तराखण्ड, जो शिक्षा और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, अब तेजी से मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है। बीते वर्षों में, राज्य में मीडिया शिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिससे छात्रों को तकनीकी दक्षता और मीडिया उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षित किया जा रहा है। हालांकि, यह भी देखा जा रहा है कि अधिकांश संस्थान आधुनिक संसाधनों, स्टूडियो और तकनीकी ज्ञान पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जबकि नैतिक मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन और शोध की महत्ता अपेक्षाकृत कम होती जा रही है।

उत्तराखण्ड जैसे राज्य, जहां सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराएं गहरी जड़ें रखती हैं, वहां मीडिया शिक्षा केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक पत्रकारिता और शोध को भी शामिल किया जाना चाहिए। वर्तमान में, कई छात्र मीडिया की चकाचौंध से आकर्षित होकर केवल कैमरा और माइक तक सीमित रह जाते हैं, लेकिन विषय की गहरी समझ के बिना वे लंबे समय तक प्रभावी पत्रकारिता नहीं कर सकते।

इस शोध का उद्देश्य उत्तराखण्ड में मीडिया शिक्षा की स्थिति का मूल्यांकन करना और इसे अधिक संतुलित व प्रभावी बनाने के उपायों पर विचार करना है। यदि मीडिया शिक्षण संस्थानों में तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ नैतिकता और शोध को भी समान महत्व दिया जाए, तो उत्तराखण्ड से उच्च गुणवत्ता वाले पत्रकार और संचारक तैयार किए जा सकते हैं, जो समाज की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कृत शब्द - उत्तराखण्ड में मीडिया शिक्षा, पत्रकारिता और संचार अध्ययन, मीडिया साक्षरता, मीडिया पाठ्यक्रम, नैतिक पत्रकारिता

भूमिका:

इन दिनों भारत सहित विश्व में मीडिया एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है। लड़खड़ाते हुए पारम्परिक मीडिया के साथ-साथ न्यू मीडिया का चलन तीव्र गति से बढ़ रहा है। जहां शिक्षित व कुशल मानवश्रम की आवश्यकता मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों में है। मीडिया के क्षेत्र में कुशल एवं शिक्षित मानवश्रम की आवश्यकता को देखते हुए भारत में पिछले दशक में मीडिया के कई शैक्षणिक संस्थान, विभाग, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय देखने को मिलते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मीडिया शिक्षण वर्तमान युग में एक तेजी से बढ़ता और उभरता हुआ शैक्षणिक विषय है। एक तरफ जहां मीडिया के स्वामित्व ने पत्रकारिता के स्वरूप को बदलकर रख दिया है तो वहीं मशरूम के भांति उग आये निजी मीडिया संस्थानों ने मीडिया के मूल चिंतन की दिशा भी बदल दी है।

अब मीडिया शिक्षण संस्थानों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को मीडिया उद्योग में प्रचलित अद्यतन तकनीकी ज्ञान से ही रुबरु कराना रह गया है। छात्रों में भी केवल तकनीकी ज्ञान पाने की प्राथमिकता रह गयी है। छात्रों द्वारा मीडिया संस्थान में उचित उपकरण, स्टूडियो व अन्य सामग्रीयों के होने की प्राथमिकता पहले देखते हैं लेकिन ये भूल जाते हैं कि इन सब माध्यमों का उचित प्रयोग करने के लिए जिस मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी वह सम्बंधित संस्थान में उपलब्ध है या नहीं! मीडिया जगत् के चकाचौंथ में छात्र केवल कैमरा के सामने माइक पकड़े आना चाहते हैं, परन्तु बिना विषय के बारिक अध्ययन के वे अधिक देर तक अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर सकते। प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मीडिया के किसी भी क्षेत्र में गहरे शोध एवं अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। यद्यपि इन शिक्षण संस्थानों में से कुछ आज भी मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व निर्माण की बातें करते हैं लेकिन कहीं न कहीं सभी मीडिया संस्थानों का जोर नवीनतम संसाधनों, स्टूडियो, उपकरणों व उद्योगपरक पाठ्यक्रम प्रणाली पर ही है, जिसके कारण आज के शिक्षण प्रक्रिया में कहीं न कहीं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी दिखती है, जो कि मूल्यनिष्ठ पत्रकारों के निर्माण में बाधक हो सकती है। मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व निर्माण की शिक्षा दूरदर्शी पूर्ण तरीके से समाज की सेवा करने की चाह रखने वाले पत्रकारों के निर्माण में सहायक होती है।

शोध के उद्देश्य

- उत्तराखण्ड के शिक्षण संस्थानों के मीडिया विषय के शिक्षक एवं छात्रों के शैक्षणिक स्तर का अध्ययन करना।
- उत्तराखण्ड के शिक्षण संस्थानों से जुड़े मीडिया विभाग के विषय, संसाधन एवं पाठ्यक्रम का आकलन करना।

साहित्यिक सर्वेक्षण

साहित्यिक सर्वेक्षण के आधार पर पता चलता है कि मेरे शोध विषय “उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में मीडिया शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन” से संबंधित कोई शोध कार्य मेरे संज्ञान में नहीं हुए है। इससे संबंधित जो कुछ कार्य हुए हैं वे इस प्रकार हैं।

1. कुमार केवल जे, (2006): मीडिया एजुकेशन, रेगुलेशन एंड पब्लिक पॉलिसी इन इंडिया।

केवल कुमार जे ने अपने शोध प्रपत्र में मुख्यतः इन बातों पर जोर डाला है कि मीडिया शिक्षण इन दिनों एक नए दौर में है जहां हमें मीडिया शिक्षा में पूर्व रूपेण दृढ़तापूर्वक एक नए पुनर्विचार की आवश्यकता है, जहां मीडिया शिक्षण, मीडिया के वैश्वीकरण के संकटों का सामना कर सके।

2. रे जी.एन, (2008): स्टैंडर्डाइजेशन ऑफ मीडिया एजुकेशन इन विथ द कंसर्न्ड।

इस शोध पत्र में रे जी.एन सुझाव देते हुए यह कहा है कि पत्रकारिता के स्तर को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है ताकि इसकी गुणवत्ता से इसे प्रत्येक जगह एक वास्तविक पेशे के रूप में पहचाना जाए। अतः इसके लिए पत्रकारिता के शैक्षणिक संस्थानों को स्थानीय स्तर के मीडिया संस्थानों से साझेदारी करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि मीडिया के शैक्षणिक पाठ्यक्रम ऐसे होने चाहिए जो मीडिया के विद्यार्थियों को समालोचक के रूप में उभरने का अवसर दें।

3. सिंह, सुखनंदन, (2015): जर्नलिज्म फॉर नेशन बिल्डिंग विथ स्पेशल रेफरेंस टू मीडिया एजुकेशन।

इस पत्र के माध्यम से, भारतीय मीडिया शिक्षा की वर्तमान स्थिति, इसकी निरंतर समस्याएं और सुझाव दिया गया है कि आज पत्रकारिता और मीडिया शिक्षा में मुख्य चुनौती मौजूदा प्रशिक्षण और शिक्षा सुविधाओं को बढ़ाना नहीं है, बल्कि मीडिया शिक्षाविदों, पेशेवरों, मीडिया द्वारा सामूहिक प्रयासों के माध्यम से उन्हें मजबूत करना है।

4. सतचित, शिव (2020). रीथिंकिंग क्रिटिकल मीडिया लिटरेसी एजुकेशन फॉर प्रोमोटिंग इनफॉर्म्ड सिटीजनशिप इन इंडिया।

इस शोध के माध्यम से यह बताया गया है कि डिजिटल मीडिया के युग में मीडिया साक्षरता की आवश्यकता कितनी महत्वपूर्ण है। साथ ही यह तर्क दिया है कि मीडिया साक्षरता लोगों को सूचना का विश्लेषण करने एं मीडिया के प्रभाव को समझने और सच-झूठ की पहचान करने में सक्षम बनाती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र में मीडिया साक्षरता का प्रभाव चुनावी प्रक्रियाएं नीतिगत बहसों और सामाजिक भागीदारी में महत्वपूर्ण है।

5. कुमार, राजेश और नंदिनी, नेहा (2021). मीडिया एजुकेशन इन इंडिया: जर्नी फ्रॉम इवेलुएशंस टू ट्रांसफॉर्मेशन.

यह अध्ययन भारत में मीडिया शिक्षा के विकास और उसके बदलते स्वरूप पर केंद्रित है। लेखकों ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ-साथ वर्तमान परिवृश्य का विश्लेषण किया है और यह दर्शाया है कि मीडिया शिक्षा किस प्रकार एक पारंपरिक अकादमिक विषय से आधुनिक डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है।

शोध क्रियाविधि

- अनुसंधान पद्धति: सर्वेक्षण
- गुणात्मक व मात्रात्मक विश्लेषण
- सैंपलिंग का प्रकार - उद्देश्यपूर्ण
- सैंपलिंग के लिए उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र से 08 मीडिया संस्थानों के 135 छात्रों द्वारा आंकड़ा लिया गया जो कि बीए-जे.एम.सी, एम.ए-जे.एम.सी और पी.जी.डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्र थे।
- आंकड़ा संग्रह उपकरण - प्रश्नावली एवं साक्षात्कार
- साक्षात्कार के अंतर्गत मीडिया से जुड़े प्रोफेसरों/व्याख्याताओं के साक्षात्कार लिए गए।

मीडिया: अर्थ, परिभाषा, अवधारणा एवं प्रकार

• मीडिया का अर्थ-

मीडिया लैटिन शब्द 'मीडियम' का बहुवचन रूप है। मीडियम का अर्थ होता है- संचार अथवा स्वयं को या कुछ अभिव्यक्त करना। अमूल्यन मीडिया द्वारा सूचना उन लोगों तक पहुंचती है, जो देश या विदेश के दूरस्थ क्षेत्रों में रहते हैं। सूचना का यह प्रचार-प्रसार मीडिया द्वारा संचार के किसी माध्यम द्वारा किया जाता है। वैसे तो विभिन्न मीडिया माध्यम के अपने-अपने विशेष माध्यम होते हैं।¹ जिनके द्वारा वह दर्शकों एवं श्रोताओं तक अपने संदेशों का संप्रेषण कर सकते हैं। यह बात गौर करने योग्य है कि मीडिया का अर्थ सामान्यतः प्रिंट, रेडियो एवं टेलिविजन के सामूहिक समूह के रूप में किया जाता है। अर्थात् मीडिया का अर्थ इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट दोनों माध्यमों से लगाया जा सकता है। चूंकि मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है और जैसे-जैसे मनुष्य की समझ बढ़ती गई वैसे-वैसे वह समाज एवं समूह में स्वयं को व्यवस्थित करता गया। स्वभाव से जिजासु मनुष्य के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह देश एवं दुनिया में हो रही प्रमुख घटनाओं की जानकारी ले सकें, तो जैसे-जैसे मानव सभ्यता विकसित होती गई वैसे-वैसे मीडिया का भी विकास होता गया।

• मीडिया की परिभाषा-

मीडिया की विभिन्न पत्रकारों एवं लेखकों ने निम्न परिभाषाएँ दी हैं -

- डेनिस मैकवील के अनुसार, 'मीडिया समाज परिवर्तन की यन्त्र शक्ति है।'
- रशिम बोहरा के अनुसार, 'मीडिया समाज का दर्पण है।'
- आर. के. मजूमदार के अनुसार, 'मीडिया वह माध्यम हैं, जिसके द्वारा समाज शिक्षित होता है।'

¹ Freeman, Bradley. (2018). Communication and Media: Types, Functions, and Key Concepts.

- कृष्ण कुमार के अनुसार, 'मीडिया वह साधन है, जिसके द्वारा नागरिकों को उनके अधिकारों का आभास होता रहता है।'

- **भारतीय मीडिया की अवधारणा-**

'मीडिया का अर्थ है माध्यम और माध्यम के साधनों का बहुवचन रूप संचार है और यह अभिव्यक्ति की एक विधा है।' 1920 से मीडिया शब्द उपयोग होना शुरू हो गया था, जब तक जनसंचार की धारणा रेडियो, टीवी के आने से पहले आमतौर पर दूसरे विश्व युद्ध तक प्रिंट मीडिया तक ही सीमित थी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही विभिन्न प्रकार के मीडिया की उत्पत्ति विश्व के इतिहास के विभिन्न चरणों के में हुई। प्रिंट मीडिया में किताबें, पर्चे, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं, जो पिछली 15 वीं शताब्दी से उत्पन्न हुई हैं। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ग्रामोफोन रिकॉर्ड, चुंबकीय टेप, कैसेट, कारटेज, सीडी, डीवीडी आदि सहित रिकॉर्डिंग की शुरुआत हुई। रेडियो लगभग 1910 से अस्तित्व में आया। लगभग 1950 में टेलीविजन, 1990 में मोबाइल फोन और 2000 में इंटरनेट ने अपनी जगह बनाई। मीडिया को समाज पर प्रकृति, दायरे और प्रभावशीलता के आधार पर व्यापक रूप से दो प्रकार में वर्गीकृत किया गया है: दृश्य और गैर-दृश्य। प्रेस या मीडिया ने भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के चौथे स्तंभ के रूप में मूल्यांकन किया जो स्वतंत्रता के संघर्ष का प्रमुख बल था। कई स्वतंत्रता सेनानियों ने लोगों को सार्वजनिक मुद्दों पर संबोधित करते हुए राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करने के लिए विभिन्न समाचार पत्र और साहित्य शुरू किए। स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी मीडिया को लोगों के समर्थन और विश्वास के कारण सम्मान, प्रतिष्ठा मिली।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान स्वतंत्र प्रेस और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का आश्वासन देता है और सरकारी विनियमन के बिना एक प्रेस या मीडिया को सुनिश्चित करता है। मुक्त मीडिया सूचना का अनिवार्य स्रोत है जो मुक्त समाज का हृदय है। भारत में सरकार मीडिया के प्राथमिक नियामक की भूमिका निभाता है। इसने न केवल मीडिया गतिविधियों को विनियमित करने के लिए बल्कि उनकी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए भी विशेष कानून की स्थापना की है। मीडिया उद्योग को विनियमित करने के उद्देश्य से भारत में विभिन्न प्राधिकरण सूचना और प्रसारण मंत्रालय, प्रेस सूचना ब्यूरो, भारतीय प्रेस परिषद, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, दूरसंचार नियामक प्राधिकरण आदि के रूप में समय-समय पर विभिन्न कानून बनाकर स्थापित किए गए हैं।²

- **मीडिया के प्रकार**

मीडिया संचार के उपकरण हैं जो विभिन्न भाषाओं में बड़ी संख्या में दर्शकों के साथ संवाद और बातचीत करने के लिए उपयोगी हैं। कोई भी मीडिया से खुद को अलग नहीं कर सकता है। मीडिया का उपयोग मनोरंजन और संचार के प्रसार के साथ ही सूचना, विज्ञापन, विपणन, और विचारों को व्यक्त करने और साझा करने के लिए भी किया जाता है। मास मीडिया लाभ और हानि दोनों से गुजरता है अर्थात यह वह दोधारी तलवार है जो जनता पर सकारात्मक के साथ साथ नकारात्मक प्रभाव भी डालती है।²

1) प्रिंट मीडिया

परंपरागत रूप से प्रिंट मीडिया शब्द का प्रयोग मुद्रित कार्यों के वितरण को संदर्भित करता है। इसमें अखबार, पत्रिकाएं, पुस्तिकाएं, हाउस पत्रिकाएं, डायरेक्ट मेलर्स, हैंडबिल या फ्लायर्स, बिलबोर्ड, प्रेस रिलीज, किताबें आदि शामिल हैं।

2) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक तरह का मीडिया है, जिसे एक्सेस करने के लिए उपयोगकर्ता को इलेक्ट्रिक कनेक्शन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इसे ब्रॉडकास्ट मीडिया के नाम से भी जाना जाता है। इसमें टेलीविजन, रेडियो, और नए जमाने के मीडिया जैसे इंटरनेट, कंप्यूटर, टेलीफोन आदि शामिल हैं।

² https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/203650/10/10_chapter4.pdf. Retrieved on 04 oct 2024

3) न्यू मीडिया

इंटरनेट के आगमन के साथ अब हम उच्च प्रौद्योगिकी मॉस मीडिया का लाभ उठा रहे हैं, जो न केवल पुराने मॉस मीडिया की तुलना में तेज है, बल्कि इसकी रेंज भी व्यापक है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर और इंटरनेट को अक्सर नए यंगु के मीडिया के रूप में जाना जाता है। इंटरनेट ने बड़े पैमाने पर संचार के कई नए अवसर खोले हैं, जिनमें ईमेल, वेबसाइट, ई-फोरम, ई-बुक्स, ब्लॉगिंग, इंटरनेट टीवी और कई अन्य शामिल हैं। इंटरनेट ने सोशल नेटवर्किंग साइटों को भी शुरू किया है, जिन्होंने सभी के साथ सामूहिक संचार को फिर से परिभाषित किया है। फेसबुक, टिकटॉक और यूट्यूब जैसी साइटों ने आम जनता के लिए संचार को अधिक मनोरंजक, दिलचस्प और आसान बनाया है।

मीडिया शिक्षा: आवश्यकता और महत्व

मीडिया अंग्रेजी भाषा का शब्द है जो हिंदी में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। मीडिया की शुरुआत एक मिशन के रूप में हुई थी जिसका उद्देश्य समाजहित तथा देशहित था लेकिन अब मीडिया एक व्यवसाय बन गया है और बढ़ गया है मनोरंजन। इसने मीडिया की तकनीक को बदला। नई साज-सज्जा आई, नया मिजाज, नये पत्रकार, नये संपादक, नई तकनीक सब कुछ नया दिखाई दे रहा है। सिर्फ मिल्कियत ही पुरानी है। इस नई फौज ने नई भूख, नई चाहत, नये सपने, नये द्वंद, नये संघर्ष दिये हैं।

पहले युवा डॉक्टर व इंजीनियर बनना अधिक पसंद करते थे लेकिन अब पत्रकार एवं अभिनेता बनना पसंद कर रहे हैं। क्योंकि इस व्यवसाय में ग्लैमर है और पैसा भी। मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए विश्वविद्यालयों ने मीडिया को एक विषय के रूप में पढ़ाना और विकसित करना उचित समझा है ताकि युवा विश्वविद्यालय स्तर पर मीडिया का प्रशिक्षण लेकर कुशल मीडिया संचालक बन सके। समाजसेवा के साथ-साथ अपना रोजगार स्थापित कर सके।³

मीडिया की सबसे बड़ी शर्त अपने पाठकों की रुचि समझने की है। पाठक कल क्या पढ़ना चाहता है और किस पर चर्चा कराना चाहता है? मीडिया की आवश्यकता पाठ्यक्रम में प्रस्तुतीकरण से अधिक व्यावहारिक जीवन में उतारने की है। पिछले दो दशकों में मीडिया पर काफी काम किया गया है। सभी कार्यों में व्यावहारिक पक्ष का विशेष ध्यान रखा गया तब नए दिशा-निर्देशों के रूप में इन पर शोध की आवश्यकता महसूस हुई और इस क्षेत्र में कुछ काम भी हुए। लेकिन मीडिया संस्थानों और विश्वविद्यालयों को प्रयास गाइडलाइन नहीं मिल पा रही थी इसलिए मीडिया शिक्षण जैसे विषयों पर शोध की आवश्यकता पड़ी। पत्रकारिता प्रशिक्षण में जितना कला पक्ष को उभारा जाता है उतना कौशल पक्ष को नहीं। जरूरत कौशल पक्ष को उभारने की है।

भारत में मीडिया शिक्षा की उत्पत्ति

भारत में मीडिया शिक्षा⁴ की उत्पत्ति लगभग 1980 में हुई और इसका श्रेय भारत के दक्षिण राज्य को जाता है। जिन्होंने मीडिया शिक्षण में अग्रदूत की भूमिका निभाई। भारत में मीडिया विभाग खोलने का पहला प्रयास मद्रास में एनी बेसेंट के द्वारा एडेयर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हुआ। लेकिन यह प्रयास ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाया। इसी दौरान भारतीय जनलिस्ट एसोसिएशन कलकत्ता द्वारा किया गया प्रयास भी, जिसमें पत्रकारों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कोर्स आयोजित की जाती थी, वह प्रयास भी असफल रहा। पत्रकारिता में पहला विश्वविद्यालय स्तरीय कोर्स अलीगढ़ में सन 1938 में प्रस्तावित हुआ जो कि सन 1940 में खत्म कर दी गई। लाहौर में प्रोफेसर पी.पी सिंह द्वारा स्थापित पत्रकारिता विभाग, जो कि पंजाब विश्वविद्यालय के तत्वावधान में सन 1941 में स्थापित किया गया था जिसे भारत के सबसे पुराने मीडिया विभाग में आज भी गिना जाता है।

वर्तमान की आवश्यकता और बढ़ते तकनीकी व विश्वस्तरीय समग्र मार्केटिंग संचार व्यवसाय वातावरण को देखते हुए निजी संस्थान ने भी मजबूत व्यवसायिक संपर्क स्थापित किए। साथ ही पाठ्यक्रम में विविधता व विभिन्न क्षेत्रों के सम्बद्ध संकाय से संपर्क व उनके शोध पर बल देने लगे। सबसे महत्वपूर्ण यह कि उन्होंने ब्रांड निर्माण के महत्व को

³ सिंह, देवदत्त. मीडिया मंथन. विजडम पब्लिकेशन (2018)

⁴ Kumar, Keval J. (2007) MEDIA EDUCATION, REGULATION AND PUBLIC POLICY IN INDIA.

समझा, आला बाजारों का निर्माण कर देश के कोने-कोने से विद्यार्थियों का नामांकन व उद्योग के अनुभवी संकायों का चयन जैसे बातों पर विशेष ध्यान दिया। किसी ने भी यूजीसी से संबद्ध करने का नहीं सोचा। जो कि एक संघीय संस्था है। सभी ने अपने विहळता से मार्केट प्लेस से ही अपनी मांग पूरी की और वे सभी सफल भी हुए।⁵

उत्तराखण्ड के मीडिया संस्थान एक विहंगम दृष्टि-

उत्तराखण्ड में मीडिया शिक्षण संस्थानों के लिए बहुत से संभावनाएं विद्यमान हैं, इन्हीं संभावनाओं की तलाश में यहां नित नए मीडिया शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं। उत्तराखण्ड में कई संस्थान अपने यहां मीडिया विभाग व संकाय चालू कर रहे हैं, सरकारी विश्वविद्यालयों के साथ प्राइवेट विश्वविद्यालय भी मीडिया संकाय चालू कर युवाओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। हाल ही में यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, देहरादनू ने नए सत्र में अपने यहां स्नातक और परास्नातक में मीडिया के लगभग 10 नए पाठ्यक्रमों को संचालित करने की योजना बनाई है, जिसमें पत्रकारिता एवं जनसंचार, विज्ञापन एवं डिजिटल मीडिया, फोटोग्राफी, मीडिया एंड एंटरटेनमेंट, इवेंट, पब्लिक रिलेशन और कारपोरेट कम्युनिकेशन मुख्य है। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड में निम्नलिखित प्रमुख विश्वविद्यालयों में मीडिया के कोर्सेस चल रहे हैं जिनमें हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, जिज्ञासा यूनिवर्सिटी (हिमगिरि ज़ी यूनिवर्सिटी), देहरादनू, आईएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून, कुमाऊं यूनिवर्सिटी, डीएसबी कैंपस, नैनीताल, उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी, नैनीताल, उत्तराखण्ड संस्कृत यूनिवर्सिटी, हरिद्वार, दून यूनिवर्सिटी, देहरादनू प्रमुख हैं।

ऐसा नहीं है कि उत्तराखण्ड में मीडिया शिक्षा का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है, इसके विपरीत कई संस्थानों में पत्रकारिता से जुड़े कई पाठ्यक्रमों का संचालन ही बदं कर दिया गया है, जिनमें ऑकारानंद इंस्टीट्यूट, ऋषिकेश में पत्रकारिता विभाग को पूरी तरह बंद करने के साथ गुरुकलु कांगड़ी, हरिद्वार में संचालित हिंदी पत्रकारिता व उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार में डिप्लोमा व स्नातक के पाठ्यक्रम को बदं कर दिया गया है। ऐसे में यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि उत्तराखण्ड में मीडिया संस्थानों को संभावनाओं के साथ-साथ ढेरों चुनौतियां भी हैं, जिनसे उन्हें पार पाना है।

आंकड़ों का विश्लेषण व्याख्या एवं परिचर्चा-

आंकड़ों का विश्लेषण:-

इस शोध अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़े मुख्यतः उत्तराखण्ड प्रदेश के गढ़वाल क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के 135 विद्यार्थियों के उत्तरों का संग्रहण है। ज्ञातव्य हो कि यह आंकड़े समस्त विद्यार्थी मीडिया के स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्र हैं। जिनकी संख्या इस प्रकार है-

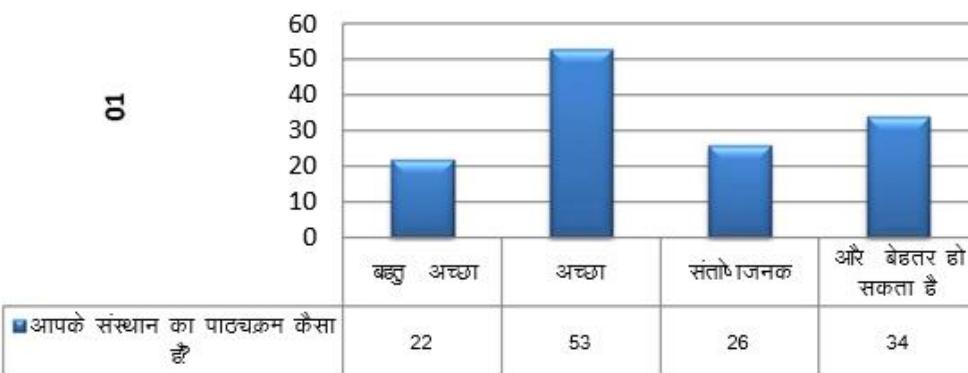


शोध अध्ययन में विश्लेषित किये जाने वाले मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं -

- पाठ्यक्रम
- प्लेसमेंट
- संरचनात्मक ढाचा
- शिक्षण पद्धति
- प्रयोगात्मक अनुभव

⁵ Personal Communication, March (2006)

आपके संस्थान का पाठ्यक्रम कैसा है?



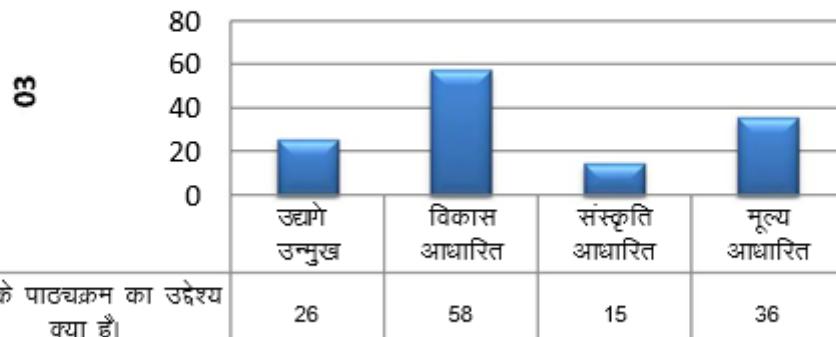
आलेख क्रमांक 01, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि आपके संस्थान का पाठ्यक्रम कैसा है? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आलेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 53 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 2 'अच्छा' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 34 विद्यार्थियों ने 'और बेहतर हो सकता है' और 26 विद्यार्थियों ने 'संतोषजनक' विकल्प का चयन किया।

क्या आपकी संस्था आपको बेहतर आधारभूत संरचना प्रदान करती है? (लैब, स्टूडियो)



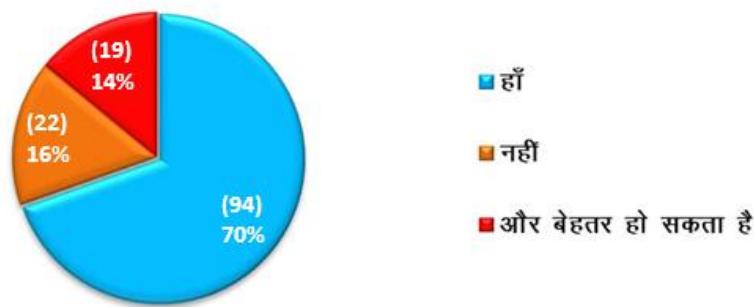
वृतीय आरेख क्रमांक 2, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या आपकी संस्था आपको बेहतर आधारभूत संरचना प्रदान करती है? (लैब, स्टूडियो)? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 90 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 1 'हाँ' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 45 विद्यार्थियों ने 'नहीं' विकल्प का चयन किया।

आपके पाठ्यक्रम का उद्देश्य क्या हैं।



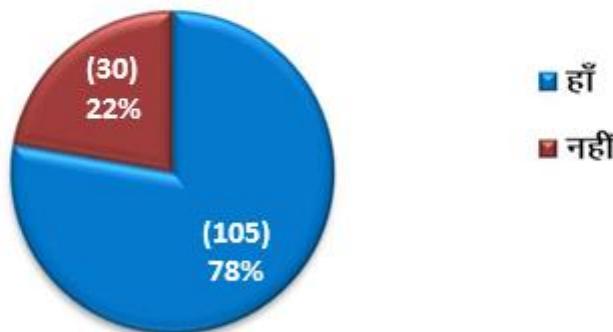
आलेख क्रमांक 3, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि आपके संस्थान का उद्देश्य क्या है? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आलेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 58 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 2 'विकास आधारित' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 36 विद्यार्थियों ने 'मूल्य आधारित' और 26 विद्यार्थियों ने 'उद्योग उन्मुख' विकल्प का चयन किया।

क्या शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण पद्धति संतोषजनक है?



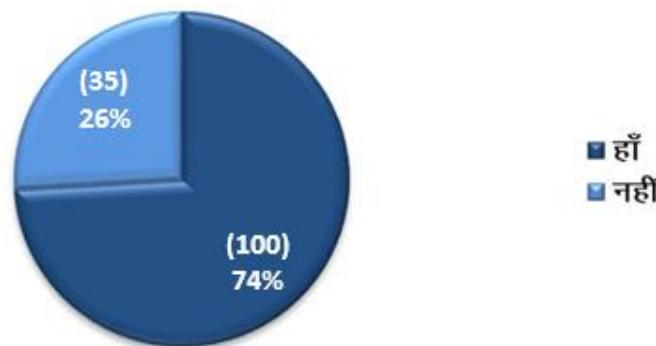
वृत्तीय आरेख क्रमांक 4, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या आपके शैक्षणिक संस्थान में शिक्षण पद्धति संतोषजनक है? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 94 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 1 'हाँ' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 22 विद्यार्थियों ने 'नहीं' और 19 विद्यार्थियों ने 'और बेहतर हो सकता है' विकल्प का चयन किया।

क्या आपके पुस्तकालय में पर्याप्त अध्ययन सामग्री है?



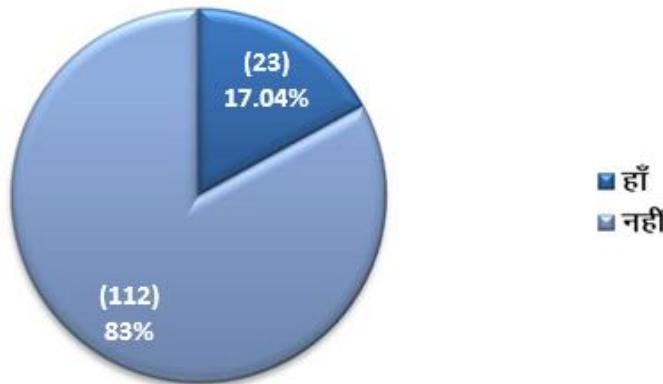
वृत्तीय आरेख क्रमांक 5, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या आपके पुस्तकालय में पर्याप्त अध्ययन सामग्री है? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 105 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 1 'हाँ' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 30 विद्यार्थियों ने 'नहीं' विकल्प का चयन किया।

क्या आपके संस्थान की कोई शोध पत्रिका है?



वृत्तीय आरेख क्रमांक 6, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या आपके संस्थान की कोई शोध पत्रिका है? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 1 'हाँ' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 35 विद्यार्थियों ने 'नहीं' विकल्प का चयन किया।

क्या आप किसी भी पत्रिका के लिए शोध पत्र लिखते हैं?



वृत्तीय आरेख क्रमांक 7, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या आप किसी भी पत्रिका के लिए शोध पत्र लिखते हैं? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 112 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 2 'नहीं' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 23 विद्यार्थियों ने 'हाँ' विकल्प का चयन किया।

क्या कोई अतिथि शिक्षक/प्रशिक्षित पत्रकार आपके संस्थान में कक्षाएं लेने आते हैं?



वृत्तीय आरेख क्रमांक 8, मिले आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रश्न में शोधार्थी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि क्या कोई अतिथि शिक्षक/प्रशिक्षित पत्रकार आपके संस्थान में कक्षाएं लेने आते हैं? तत्पश्चात मिले आंकड़ों के संग्रहण के अनुसार आरेख यह प्रस्तुत करता है कि अधिकतम 135 विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों ने विकल्प नंबर 1 'हाँ' विकल्प का चयन किया है। जिसमें 35 विद्यार्थियों ने 'नहीं' विकल्प का चयन किया।

विशेषज्ञों की राय:-

- प्रो. ए. आर. डंगवाल, पूर्व निदेशक, पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर-

मीडिया शिक्षा का गढ़वाल क्षेत्र में काफी विस्तार हुआ है लेकिन जिस ढंग से सुविधाएं होनी चाहिए थी, उस ढंग की सुविधाएं अभी काफी संस्थानों में नहीं हैं। संस्थानों में शिक्षकों की भारी कमी है और जहां शिक्षक हैं तो उनमें भी ज्यादातर लोगों में तकनीकी ज्ञान की कमी है। उचित संसाधन और व्यवहारिक कार्यों की कमी भी संस्थाओं में आसानी से देखने को मिलती है। कुछेक संस्थानों को छोड़ दें तो अधिकांश संस्थानों में शिक्षकों को जो वर्ते न भुगतान किया जा रहा है वह भी पर्याप्त नहीं है। जिसका प्रभाव शिक्षण कार्य पर भी पड़ता है। गुणवत्तापूर्ण मीडिया शिक्षण के लिए

गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की आवश्यकता है लेकिन उचित वर्ते नमान ना होने से गुणवत्तापूर्ण शिक्षक नहीं मिल पाते जिससे शिक्षक कार्य में प्रभाव पड़ता है। आज मीडिया छात्र-छात्राओं में मीडिया शिक्षण के प्रति समर्पण का भाव विकसित करने की आवश्यकता है। मीडिया की शिक्षा लेने भर मात्र से मीडिया का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। सरकार भी चाहती है कि मीडिया शिक्षा का विस्तार हो पर इसमें विद्यार्थियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका भी होती है।

आज का मीडिया विद्यार्थी इसके चकाचौंध यानि के मीडिया के ग्लैमर से प्रभावित होकर अपना नामांकन करा रहे हैं। जिससे न तो मीडिया शिक्षा का दायित्व पूरा होगा और ना ही ऐसी शिक्षा से विद्यार्थी समाज के प्रति अपना दायित्व निभा पाएगा। सरकारों को चाहिए कि वह समस्त विश्वविद्यालय और राज्य स्तर के विश्वविद्यालयों के साथ महाविद्यालयों में मीडिया शिक्षा को सामान्य शिक्षा के अनुसार चलाए। परंतु आज ज्यादातर संस्थान वित्तपोषण के अंतर्गत मीडिया विभाग संचालित कर रहे हैं। विद्यार्थियों से फीस के नाम पर वसूली भी की जा रही है जो कि किसी भी वृष्टि से ठीक नहीं है। इसलिए इसे रेगुलर कोर्स बनाने की जरूरत है ना जाने कितने सरकारी संस्थानों में उपाचार्य, प्रोफेसरों और एसोसिएट के पद रिक्त हैं जिन पर नियुक्ति करना जरूरी है। आप एक या दो शिक्षक की बदौलत मीडिया शिक्षा के सभी आयामों से विद्यार्थियों को परिचित नहीं करा सकते और आज जो संविदा पर शिक्षक कार्यरत हैं उन्हें सबसे ज्यादा परेशानी यह है कि उनके अनुभव को गिना ही नहीं जा रहा है जिस कारण उच्च पद के लिए अभ्यर्थी योग्यता हासिल नहीं कर पा रहे हैं। समाज के उत्थान के लिए मीडिया शिक्षण महत्वपूर्ण है और इसकी नितांत आवश्यकता है।

2. डॉ. राजेश कुमार, विभागाध्यक्ष, मीडिया एवं संचार केन्द्र, दून विश्वविद्यालय, देहरादून -

वर्तमान में मीडिया शिक्षण बहु-विषयक और काफी हद तक तकनीकी से संबंधित विषय है। गढ़वाल क्षेत्र में जब हम मीडिया शिक्षा की बात करते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम जिस क्षेत्र में हैं उस जगह के समाज, संस्कृति और जरूरतों का ध्यान रखना यह उसका दायित्व है। चूंकि मीडिया को जन-जन की आवाज (वॉइस ऑफ पीपुल) कहा जाता है ऐसे में मीडिया संस्थानों का पहला कर्तव्य विद्यार्थियों को समाज की आवश्यकता और जरूरतों के साथ संस्कृति और सभ्यता के बचाव के लिए जागरूक करना प्राथमिकता में होना चाहिए और अगर आप यह कार्य नहीं करते तो आप जन जन की आवाज यानी की वाइफ ऑफ पीपुल नहीं बन पाते जो किसी भी मीडिया विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। जैसा कि मैंने पहले कहा मीडिया शिक्षण तब तक नहीं होगा जब तक वह बहु-विषयक न हो और यह तभी संभव है जब आप समाज, संस्कृति, सभ्यता, अर्थनीति, राजनीति और अन्य के ज्ञान को समझ ना ले तभी यह बहु-विषयक कहलायेगा। आज के समय में मीडिया शिक्षण की जो बड़ी कमी है वह यह है कि अभी तक मीडिया शिक्षण को सही ढंग से परिभाषित ही नहीं किया गया है। इसे कहीं सामाजिक विज्ञान की तरह पढ़ाया जा रहा है तो कहीं पर इसे पेशेवर की तरह पढ़ाया जा रहा है। आज इसके मानक को सिद्ध करने की अत्यंत आवश्यकता है। इसे किसी अन्य विषय से मिला-जुला कर पढ़ाने की अपेक्षा मीडिया शिक्षा के विशेषज्ञों को अपने स्तर पर या सरकारी स्तर पर एक ऐसा ठोस प्रयास करना चाहिए जिससे मीडिया शिक्षण को एक बहु-विषयक के रूप में पहचान मिल सके। और दूसरी बड़ी कमी कि जब आप मीडिया विभाग या संस्थान की स्थापना करते हैं तो उसके लिए अच्छे वित्तपोषण यानी कि फंड की आवश्यकता पड़ती है चूंकि मीडिया शिक्षण काफी हद तक तकनीकी से संबंधित है तो इसके संसाधनों के लिए अच्छे फंड की कमी होना मीडिया शिक्षण संस्थानों के लिए एक बड़ी कमी का कारण बनता है। इनके अलावा अगर हम मीडिया शिक्षण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लाना चाहते हैं तो हमें कुछ मुख्य बिंदुओं पर काम करना होगा जैसे कि स्पष्ट नीति, उचित मानक स्थापित करना, संस्थानों में संसाधनों की कमी ना होना, उद्योग एवं पेशे से सतत लगाव होना यह सब अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों और शिक्षकों से बात करने पर पता चलता है कि आज मीडिया शिक्षा ग्रहण करने के लिए बहुत से विद्यार्थी अपना नामांकन करा तो रहे हैं लेकिन बहुत कम विद्यार्थियों को ही मीडिया के असली शिक्षा ग्रहण करने की उत्सुकता होती है। ज्यादातर विद्यार्थी मीडिया संस्थानों को ग्लैमर, एक्टिंग और मनोरंजन सिखाने की पाठशाला समझ कर ही अपना नामांकन करा रहे हैं और इसी के साथ कुछ विद्यार्थी थ्योरी ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान पाने को ज्यादा

उत्सुक रहते हैं। वहीं शिक्षकों की बात करें तो ज्यादातर मीडिया विभागों में शिक्षकों की कमीं देखने को मिलती है। शोध द्वारा प्राप्त आंकड़ों पर गौर करें तो गढ़वाल के चयनित मीडिया संस्थानों में मीडिया के विद्यार्थियों की कुल संख्या 700 है और शिक्षकों की कुल संख्या 50 है, अर्थात् छात्र-शिक्षक अनुपात 14:1 है।

अतः प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में स्थित मीडिया संस्थानों में 14 छात्रों पर मात्र 1 शिक्षक ही उपलब्ध है, जो कि बेहतर शिक्षक उपस्थिति के बिल्कुल विपरीत है। मीडिया संस्थानों में उपस्थित शिक्षकों की संख्या से यह स्पष्ट हो जाता है कि मीडिया संस्थानों को अभी और बेहतर शिक्षकों के नियुक्ति की आवश्यकता है।

उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों और धरातल पर अवलोकन के पश्चात यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के मीडिया संस्थानों को अपने यहाँ बेहतर संसाधन और पाठ्यक्रम पर कार्य करने की अत्यंत आवश्यकता है। चूंकि मीडिया जगत में नित नए-नए बदलाव हो रहे हैं। तकनीकों के नवीनीकरण के साथ उसके विशेषज्ञ का होना संस्थानों के लिए नितांत आवश्यक है।

अतः शोध के समस्त आंकड़ों के अध्ययन से यह पता चलता है कि उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के संस्थानों में मीडिया शिक्षा का स्तर न बहुत खराब है और न ही बहुत बढ़िया है। संस्थानों को मीडिया छात्रों के जरूरतों को समझने के साथ ही वर्तमान को ध्यान में रखते हुए उनके भविष्य के हिसाब से पाठ्यक्रमों को संचालित करने की आवश्यकता है। बेहतर शिक्षकों के साथ आवश्यक संसाधन (लैब व स्टूडियो) आज के समय की मांग है।

संदर्भ सूची:-

शोध पत्र-

Kumar, Keval J. (2006): "Media Education, Regulation and Public Policy in India." Diplomatie, Retrieved on 12 Oct. 2024, <https://www.diplomatie.gouv.fr/IMG/pdf/KevalKumar.pdf>.

RAY, G.N. (2008): "STANDARDIZATION OF MEDIA EDUCATION IN CONSULTATION WITH THE CONCERNED." Docplayer, Retrieved on 22 Oct. 2024, <https://docplayer.net/12255040-Standardization-of-media-education-in-consultation-with-the-concerned-the-foundation-of-every-state-is-the-education-of-its-youth-anon.html>.

PARIHAR, Tasha Singh. (2012): Journalism Education at Crossroad in India: A SWOT Analysis. IMS Manthan (The Journal of Mgt., Comp. Science & Journalism), ISSN 0974-7141. Retrieved on 22 Oct. 2024. <http://www.ijsscholar.in/index.php/im/article/view/40510>

Singh, Sukhnandan. (2015). Journalism for Nation Building with special reference to Media Education. Journal of Content, Community & Communication, Vol. 1 Year 1, 2015, Amity School of Communication, Amity University, Madhya Pradesh (ISSN: 2395-7514). 1. 2395-7514. Retrieved on 10 FEB. 2025. https://www.researchgate.net/publication/315547939_Journalism_for_Nation_Building_with_special_reference_to_Media_Education/citations

Freeman, Bradley. (2018). Communication and Media: Types, Functions, and Key Concepts. Retrieved on 12 oct 2024.

लघु शोध प्रबंध-

Gaur, Madhuri. (2018): Status of media education in Himachal Pradesh: A study. Journalism and mass communication department, DSVV, Haridwar.

पुस्तकें-

सिंह, देवव्रत. मीडिया मंथन. विजडम पब्लिकेशन (2018)

डंगवाल, ए. आर. पत्रकारिता के मूल तत्व. रजनी प्रिण्टर्स (2012)

Kumar, Keval J. Media education, communication, and public policy: an Indian perspective. Himalaya Pub. House, 1995.

वेबसाइट -

<https://www.hindustantimes.com/dehradun/universities-grow-in-uttarakhand-but-education-quality-a-concern/story-9SuRDakLsDR6L2DPooSdml.html>.

<https://timesofindia.indiatimes.com/City/Dehradun/Higher-education-in-doldrums-in-Uttarakhand/articleshow/49835578.cms>

<https://milunesco.unaoc.org/mil-articles/the-need-for-introducing-media-education-in-our-school-curriculum/>

https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=2624234

<https://doi.org/10.1177/1326365X1202200113>

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/203650/10/10_chapter4.pdf